2015

AUG-SEP

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ)

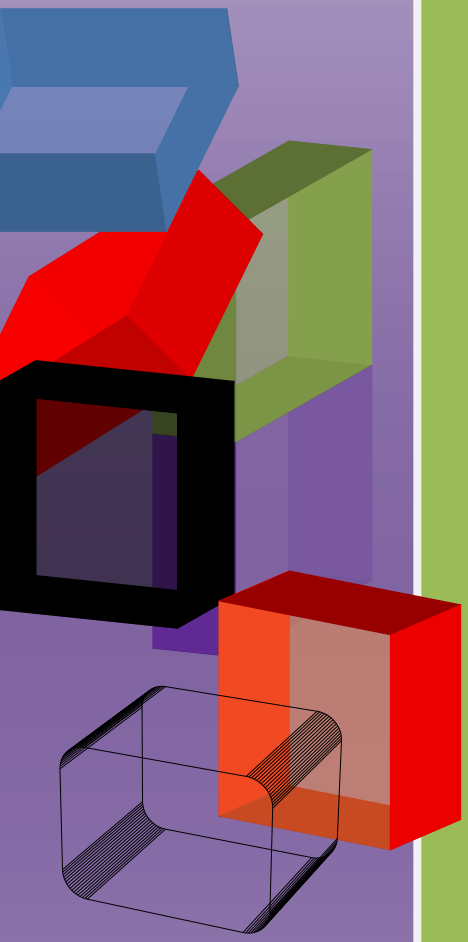

(Bi-Monthly) Peer-Reviewed Journal Impact factor: 2.125

V O L – I V I s s u e s : V

Chief-Editor:

Ubale Amol Baban

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ)
(Bi-Monthly) Peer-Reviewed Journal Vol No IV Issues V
AUGUST-SEP 2015 ISSN 2278-5655

वैष्वीकरण : हिन्दी भाषा और साहित्य

दीपिका आर्या
संशोधक
नैनिताल

भूमिका

विगत दो दषकों से 'वैष्वीकरण' शब्द ने भारतीय जनमानस को अत्यन्त प्रभावित ही नहीं किया अपितु अपने वर्तमान और भविष्य के लिए चितिंत होने की स्थिति पर लाकर खड़ा कर दिया है। वर्तमान में हमारे जन–जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जो इसके प्रभाव से अछूता रह गया हो।

वैष्वीकरण या भूमण्डलीकरण, जिसे अंग्रेजी में ग्लोबलाइज़ेषन के नाम से जाना जाता है। आज जिस कारण यह सम्पूर्ण विष्व एक 'ग्लोबल विलेज' का रूप ले चुका है। सारी पृथ्वी ही हमारा परिवार है– 'वसुधैव कुटुम्बकम्' आज इस पंक्ति का अर्थ सहीमायने में पूरा होता दिख रहा है।

भूमण्डलीकरण के तीन प्रमुख आयाम है– आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक–सांस्कृतिक। जो कि परस्पर जुड़े हुए है। आर्थिक आयाम का ध्येय है एक विष्व अर्थतंत्र और विष्व बाज़ार का निर्माण करना। और प्रत्येक देष की अर्थव्यवस्था को उससे जोड़ना।

राजनीतिक आयाम के अन्तर्गत विष्व की राजनीति को इसी अर्थतंत्र और बाजार की आवष्यकताओं के अनुसार संचालित करने की परियोजना है। संचार के अतिआधुनिक साधनों के माध्यम से विश्व में एक वैष्विक संस्कृति की रचना वर्तमान भूमण्डलीकरण का सांस्कृतिक आयाम है। एक ऐसी संस्कृति की रचना जिसमें विभिन्न राष्ट्रों, समुदायों, व्यक्तियों एवं संस्कृतियों के बीच के फासले कम हो जाए।

भाषा मानव जाति को एक सूत्र में पिरोकर रखती है। भाषा का स्वरूप निर्धारण मानव समाज द्वारा होता है। रूसी विद्वान मिखाइल बाख्तिन का कहना था कि भाषा ही समाज है। भाषा मानव की सहचरिणी है। आवष्यकता व कार्य की बाध्यता पड़ने पर जब मनुष्य विष्व के दूसरे देषों में जाता है तो उसकी भाषा का भौगोलिक विस्तार होता है।

भारत की आत्मा हिन्दी का वैष्विक पटल पर व्यापक विस्तार हुआ है। यह भारत के करोड़ों लोगों की भाषा है। साथ ही यह विष्व के कई देषों में बोली व पढ़ाई जाने लगी है।

अपने विराट वैष्विक स्वरूप के कारण ही हिन्दी विष्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। संसार की प्रमुख और षक्तिषाली भाषाओं के मध्य अपना स्थान बनाने के लिए संघर्षरत हिन्दी की वैष्विकता का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मृति न्यास' के अध्यक्ष लक्ष्मीमल्ल सिंघवी जी कहते है कि

'' हिन्दी विष्व के कोटि कोटि जन गण का कंठ स्वर है। उनकी पहचान है, सांस्कृतिक अस्मिता का मुखर स्वरूप है, अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का सेतु है।''1

विश्व पटल पर हिन्दी को स्थापित करने में अन्तर्राष्ट्रीय स्तरकी गोष्ठियों एवं सम्मेलनों का विषेष सहयोग रहा है। विष्व हिन्दी सम्मेलनों की एक अहम भूमिका रही है हिन्दी की स्थिति मज़बत करने मे। हिन्दी में रचना करने वाले अनेक विदेषी लेखक, कवि और विद्वान हैं जिन्होंने हिन्दी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

आज के वैष्वीकरण के युग में बाज़ार ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है। भारत की ओर बड़े उत्पादक देषों ने एक बड़े सम्भावित बाज़ार के रूप में देखा है जिसमें उनके सभी उत्पाद खपाये जा सकते है। जिसके लिए हिन्दी भाषा को माध्यम बनाना आवष्यक हो गया है।

पभोक्तावाद के इस दौर में इलेक्ट्रानिक समाचार माध्यमों और मनोरंजन के चैनलों पर प्रसारित किए जा रहे समाचारों, विज्ञापनों और मनोरंजन तथा षिक्षाप्रद कार्यक्रमों द्वारा भी हिन्दी के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ी है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इलेक्ट्रानिक संचार माध्यमों ने सम्पूर्ण विष्व को एक गाँव में बदल दिया है। कई विदेषी चैनलों ने अब हिन्दी में चौबीस घण्टे कार्यक्रम देना प्रारम्भ कर दिया है।प्रमुख चैनलों के संवाददाता चाहे वे कहीं के भी हो, हमें हिन्दी में समाचार देते दिखाई देते हैं।खबर भी व्यापार का ही एक अंग है। एक उत्पाद है। जिसे अधिक से अधिक लोगों की पहुँच तक लाने के लिए ऐसी भाषा की आवष्यकता होती है जो अधिकाधिक लोगों द्वारा समझी जासके। और इसी प्रयोजन को सिद्ध करने में सहायक हो गयी हमारी सम्पर्क भाषा, हिन्दी। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की नज़र में हिन्दी भाषी एक विषाल जन समूह, एक ऐसा बड़ा बाज़ार है, जिससे उनका आर्थिक हित संभव है। इसी कारण हिन्दी भाषा की मुहावरेदार शैली को अपनाकर वे अपना लक्ष्य साध रहें है। जिसमें हिन्दी के प्रति कोई लगाव या सेवा का भाव नहीं है।

अन्य बात जो कि हिन्दी के अस्तित्व पर प्रष्नचिह्न लगा देती है, वह यह है कि वैष्वीकरण के इस युग में संचार माध्यमों में जिस हिन्दी का प्रयोग हो रहा है वह हमारी बोलचाल की हिन्दी का भी भ्रष्ट रूप कहा जा सकता है।आजकल हिन्दी के साथ अंग्रेजी की प्रयोग किया जाता है। जिसमें हिन्दी का अनुपात अंग्रेजी की तुलना में कम है। चूँकि आज के समय में इन चैनलों के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दर्षक है, इसी कारण वे सभी हिन्दी और अंग्रेजी

के इस मिश्रण के लिए बाध्य है। किन्तु इसका प्रभाव हिन्दी के स्वरूप पर पड़ रहा है। जिससे हिन्दी का वास्तविक सौंदर्य घटता जा रहा है। आलोचकों ने चैनलों की इस हिन्दी को 'हिंगलिष' नाम दिया है।

प्रिट मीडिया अर्थात् पत्र–पत्रिकाएँ या इलेक्ट्रानिक मीडियाअर्थात् टी0वी0, रेडियो, कम्प्यूटर, मोबाइल आदि, सभी में हिन्दीका प्रयोग एवं उपयोगिता दोनों में व्यापक रूप से वृद्धि हुई है।हिन्दी की पत्र–पत्रिकाओं की संख्या में एक भारी बढ़ोत्तरी हुई है।

हिन्दी में टी0वी0 के कार्यक्रमों का लगातार बढ़ना भी वैष्वीकरणका ही परिणाम है। मोबाइल पर हिन्दी में एस0एम0एस0 भेजने की सुविधा अब है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी हिन्दी का प्रयोग सम्भव हुआ है।

वैष्वीकरण (भूमण्डलीकरण) से तात्पर्य–

'' वैष्विक स्तर पर सामाजिक संबंधों के सुदृढ़ीकरण को भूमण्डलीकरण की संज्ञा दी जा सकती है। भूमण्डलीकरण दूरस्थ इलाकों को एक दूसरे से इस प्रकार जोड़ता है कि मीलों दूर घटने वाली घटनाओं से तथा स्थानीय घटनाएँ मीलों दूर घटने वाली घटनाओं से साझेदारी का अनुभव करती हैं।''2

समाजषास्त्री अभिजीत पाठक ने वैष्वीकरण की विवेचना इस प्रकार की है–

'' यह सच है कि भूमण्डलीकरण आधुनिकता की ही एक तार्किक परिणति है। क्योंकि जैसा कि आधुनिकता, जिसका उद्भव पष्चिम में हुआ, अपने स्वभाव से ही वैष्विक है..... लेकिन जिसे हम भूमण्डलीकरण कहते हैं उसकी जड़ें आधुनिकता में होने के बावजूद हमारे समय में एक नए अर्थ और संवेग को पाता है।''3

इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि वैष्वीकरण कोई नयी घटना नहीं है। लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना–जाना, विचारों का प्रचार–प्रसार, विज्ञान–तकनीक की भूमंडलीय पहुँच सीमित अर्थों में ही सही, आदिकाल से चला आ रहा है। साथ ही आधुनिकता और उत्तरआधुनिकता भी वैष्वीकरण को विकसित करने का माध्यम बने।

हिन्दी के विविध रूप–

'हिन्दी' शब्द सुनते ही हमारे देष के व्यापक भू–भाग पर प्रयोग की जाने वाली भाषा का बोध हो जाता है। भारत में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं में हिन्दी भाषा का क्षेत्र वृहत्तर है। भौगोलिक सीमा विस्तार के साथ ही हिन्दी जन जीवन में विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाह कर रही है। अपनी विविध भूमिकाओं में हिन्दी जन–भाषा, मातृभाषा, सम्पर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्क भाषा के रूपों में बहुमुखी उत्तरदायित्व का पालन कर रही है।

वैष्वीकरण और हिन्दी–

वैष्वीकरण में जिस प्रकार एक नई 'आर्थिक संहिता' लिखे जाने का प्रयास हो रहा है,

उसी प्रकार हिन्दी को भी अपने तरीके से, अपने हित में प्रयोग करने का क्रम चला आ रहा है। हिन्दी का स्वरूप आज विराट हैं। ग्लोबल या वैष्विकहै। हिन्दी भाषा के विद्वान रामविलास शर्मा हिन्दी को विष्व भाषा बनाने के पीछे विभिन्न देषों को गए कुली मजदूरों को मानते है– '' इन्हीं हिन्दी भाषी कुली मजदूरों ने हिन्दी को विष्वभाषा बनाया है।.....विष्वभाषा के रूप में हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है, साम्राज्यवादी प्रभुत्व के दिन गए।''4

डॉ0 आषा शुक्ल हिन्दी की वैष्विक स्थिति के प्रति अत्यधिक उत्साहित दिखती है– ''आज लगभग 20 देषों में भारतीय मूल के लोग रहते हैं; अप्रवासी भारतीय रहते हैं और उन 20 देषों में अधिकांष लोग हिन्दी बोल और समझ लेते है। दुनिया के लगभग 153 विष्वविद्यालयों में इस समय हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था है।''5

हिन्दी के इस अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप को वे 'आष्चर्यचकित कर देने वाला' मानती है। आज कई देषों में हिन्दी, समाज की संपर्क भाषा, षिक्षण संस्थानों की भाषा, साहित्य सृजन की भाषा एवं पत्र–पत्रिकाओं की भाषा का दायित्व निभा रही है। हिन्दी के युवा

कथाकार अषोक गुप्ता के अनुसार–

''कुल जमा, हिन्दी जहाँ है, वहाँ तो रहेगी क्योंकि वह हमारे जन जीवन की भाषा है और दूसरे अस्तित्व के प्रति चिंता करने का कोई औचित्य नहीं है।''6

जनसंचार माध्यम और हिन्दी–

जनसंचार माध्यम का अर्थ जनता में सूचना–विचार का प्रचार प्रसार करना है। जिसके लिए जनता की भाषा का होना आवष्यक है। जनसंचार माध्यम, प्रेस, श्रव्य माध्यम, रेडियो, दृष्य–श्रव्य माध्यम अर्थात् टेलीविज़न तथा अन्य इन्टरनेट, कम्प्यूटर आदि, इन सभी पर वैष्वीकरण का प्रभाव दिखाई देता है। जिनमें हिन्दी का बदलता स्वरूप स्पष्टतः उभरकर सामने आ जाता है। जनसंचार माध्यमों में हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ने का कारण यही है।

भूमंडलीकरण के इस दौर में व्यावसायिक कम्पनियों और जनसंचार माध्यमों में हिन्दी विज्ञापनों पर ही सर्वाधिक बजट खर्च किया है। एक समय था जब हिन्दी– उर्दू शब्दों से युक्त हिन्दुस्तानी प्रयोग में लायी जाती थी किन्तु आज वैष्वीकरण के प्रभाव से हिन्दी में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग इतना बढ़ गया है कि हिन्दी का स्वरूप ही विकृत होता जा रहा है। इसे हिंग्लिष कहा जाने लगा है। हिन्दी को लोकप्रियता की कीमत चुकानी पड़ रही है।

पत्रकारिता और हिन्दी–

भूमंडलीकरण और जनसंचार क्रान्ति के वर्तमान दौर में हिन्दी पत्रकारिता के साथ ही देष की प्रांतीय भाषाओं की पत्रकारिता में भी विस्फोटक परिवर्तन हुआ है। पिछले दो दषकों में हिन्दी समाचार–पत्रों की पहुँच नगर–महानगर से निकलकर कस्बों और देहातों तक हो गई है। किन्तु साथ ही हिन्दी पत्रकारिता आज एक सफल उद्योग के रूप में सिमट कर रह गयी

है।

भूमंडलीकरण के बाद अखबारों का उद्देष्य नागरिकों के लिए खबर प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि खबरों के मूल अर्थ को त्यागकर सिर्फ खूबसूरत ढ़ंग से सजाकर 'उपभोक्ता' को बेचना है। चाहे फिर शब्दों को तोड़–मरोड़ कर ही क्यों न रख दिया जाय। हिन्दी समाचार–पत्रों से साहित्य का पन्ना धीरे धीरे गायब होता जा रहा है। उसकी जगह विष्व की रोमांचक और मनोरंजनपूर्ण खबरों ने ली है।

उपसंहार–

वैष्विक स्तर पर हिन्दी का भाषिक और भौगोलिक दायरा बढ़ रहा है। इसे विष्व भाषा के रूप में लचीला बने रहना आवष्यक है। हिन्दी के अन्दर विष्वमन का भाव जितना जागरूक होगा उतनी ही हिन्दी की ग्राह्यता में विस्तार आयेगा। हिन्दी भाषा की वैष्विकता को प्रोत्साहन देते हुए सन् 1996 में त्रिनिडाडे एवं टोवैगो में होने वाले विष्व हिन्दी सम्मेलन पर भारत सरकार द्वारा प्रकाषित स्मारिका के लिए भेजे गए संदेष में तत्कालिक राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा ने कहा कि–

''अपनी सहृदयता, सौहार्द्रता एवं समंवय के गुण के कारण आज हिन्दी वहॉ तथा विष्व के अन्य देषों में बसे भारत–वंषियों के बीच संपर्क की भाषा बन गई है। मुझे यह देखकर अच्छा लगा कि वहॉ भारतीय भाषाएँ, कला और संस्कृति के अपने विकास के द्वारा दोनों देषों के भावनात्मक संबंधों और घनिष्ठ बना रही है। हिन्दी भाषा इन सबको आपस में जोड़ने का यह महत्वपूर्ण दायित्व निभा रही है।''7

हिन्दी का वैष्विक पटल पर व्यापक विस्तार हुआ है। यह भारत के करोड़ों लोगों की भाषा है। साथ ही यह विष्व के कई देषों में बोली व पढ़ाई जाने लगी है। अपने विराट वैष्विक स्वरूप के कारण ही हिन्दी विष्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। आज हिन्दी का प्रयोग केवल व्यवसाय के ही नहीं अपितु षिक्षा, विज्ञान, कम्प्यूटर, सूचना प्रौद्योगिकी, भाषिकीय एटलस, ब्राण्ड स्थापना, संवैधानिक कार्यान्वयन आदि क्षेत्रों में भी हो रहा है। आज हम वैष्विक पटल पर हिन्दी के व्यापक उभरते हुए स्वरूप की व्यापक कल्पना कर सकते है। हिन्दी की भूमण्डलीयकरण के प्रति आषावान और सकारात्मक दृष्टि रखते हुए विमलेषकांति वर्मा लिखते हैं कि –

'' स्पष्ट है कि अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर हिन्दी आज विष्व की एक प्रतिष्ठित भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त भाषा है जो अपनी संख्या के बल के आधार पर तो विष्व की दूसरी प्रमुख भाषा है ही, वह विष्व की एक ऐसी भाषा है जिसे विष्व के किसी भी देष में बसे हुए भारतीय, चाहे वे मूलतः किसी भी भाषा के बोलने वाले हों, हिन्दी को अपनी अस्मिता से जुड़ा हुआ मानते हैं; वे उसकी सुरक्षा तथा प्रतिष्ठा के प्रति निरन्तर सचेत हैं।.....हिन्दी आज भारत की

ही नहीं, विष्व भाषा का स्थान ले चुकी है।''8

संदर्भ

1– स्मारिका, सातवाँ विष्व हिन्दी सम्मेलन, जून 2003
2– इंटरनेट– एंथोनी गिडेस,1990, ''द कांसीक्वेंसज ऑफ मॉडर्निटि, केब्रिजः पालिटि प्रेस
3–अभिजीत पाठक, 2006, मॉडर्निटि, ग्लोबलाइजेषन एंड आइडेंटिटीः टुआर्डस ए रिफलेक्सिव क्वेस्ट, दिल्ली,
4– हिन्दी मत अभिमत, विमलेषकांति वर्मा,
5– राष्ट्रभाषा, अगस्त, 2003
6– गगनांचल, जुलाई–सितम्बर, 1999
7– स्मारिका, पाचवाँ विष्व हिन्दी सम्मेलन,1996,
8– फीजी मे हिन्दी : स्वरूप और विकास, विमलेषकांति वर्मा और धीरा वर्मा,